मृतकों के लिए तवाफ करने और क़ुर्आन ख़त्म करने का हुक्म

﴿ الطواف وختم القرآن للأموات ﴾

[हिन्दी - Hindi - هندي]

अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ रहिमहुल्लाह

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2010 - 1431

islamhouse.com

﴿ الطواف وختم القرآن للأموات ﴾

« باللغة الهندية »

سماحة الشيخ العلامة عبد العزيز بن عبد الله بن باز
رحمه الله

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2010 - 1431

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

मृतकों के लिए तवाफ करने और क़ुर्आन ख़त्म करने का हुक्म

प्रश्नः

मैं कभी कभी अपने किसी रिश्तेदार के लिए या अपने माता पिता के लिए या अपने मृतक दादा दादी के लिए तवाफ करता हूँ तो इस का क्या हुक्म है ? तथा उन के लिए क़ुर्आन खत्म करने का क्या हुक्म है ?

उत्तरः

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान अल्लाह के लिए योग्य है।

इस को त्याग कर देना और न करनी ही अफ़ज़ल (सर्वश्रेष्ठ) है ; क्योंकि इस का कोई प्रमाण और सुबूत नहीं है, किन्तु आप के लिए अपने रिश्तेदारों वगैरा में से जिस की तरफ से चाहें - बशर्ते की वे मुसलमान हों - सद्क़ा (ख़ैरात) करना, उन के लिए दुआ करना, और उन की तरफ से हज्ज और उम्रा करना धर्म संगत है। जहाँ तक उन की तरफ से नमाज़ पढ़ने, तवाफ करने और उन के लिए क़ुर्आन पढ़ने का प्रश्न है तो इस को छोड़ देना और न करना ही बेहतर है ; क्योंकि इस का कोई प्रमाण नहीं है।

कुछ विद्वानों ने इसे सद्क़ा व ख़ैरात और दुआ पर क़ियास करते हुये जाइज़ कहा है, परन्तु सावधानी और एहतियात का पहलू इसे न करने (त्याग कर देने) ही में है। और अल्लाह तआला ही तौफीक़ प्रदान करने वाला (शक्ति का स्रोत) है।

समाहतुश्शैख अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ रहिमहुल्लाह की किताब मजमूअ फतावा व मक़ालात मुतनौविआ 8 / 345.